Sub - Psychology

B.A. Past II (Hons)

Paper - III

Chapter - Introduction to Psychopathology

Topic — Historical Antecedent of Psychopathology (Part-III)

By - Nishikant Jaiswal (Assistant Professor)

Dr. L.K.V.D College Tajpur, Samastipur.

Lecture series No - 40

Historical Antecedent of Psychopathology
(The age of Scientific Renaissance)

16वीं शताब्दी में मध्यकाल के अन्धविश्वास और अन्धी परम्पराओं का अन्त हुआ था तथा एक नयी वैज्ञानिक परम्परा का उदय हुआ था। इसलिए इस शताब्दी को पुनर्जागरण काल भी कहा जाता है। इस शताब्दी में यूरोप के कई वैज्ञानिकों ने मानसिक रोगों के मनोवैज्ञानिक कारणों की खोज की तथा उसके उपचार के वैज्ञानिक ढंग भी बताये।

मानसिक रोगों की चिकित्सा की दशा में 18वीं शताब्दी में फिलिप, पिनेल, जन एस्कयूरल, विलियम ट्रयुक, बेन्जामिन रश आदि विद्वानों के नाम प्रमुख है। इस युग में मुख्य रूप से दो दृष्टिकोण देखने को मिलते है- (1) दैहिक दृष्टिकोण (2) मनोजात दृष्टिकोण

Teachers Signature.....

Scanned with CamScanner

1. दैहिक दृष्टिकोण (Somatic point of view) - हॉलैण्ड ग्रिजिंगर, क्रेपलिन प्रमुख विद्वान थे। इन विद्वानों का मानना था कि मानसिक रोगों का मूल आधार अवयवी विकार है। क्रेपलिन का नाम इस सम्बन्ध में सबसे ज्यादा महत्वपूर्ण है। उन्होंने Pathology में अव्यंक नामक अलग बाँटा। उनका मानना था कि असामान्य की श्रेणी में चारित्रिक दोष, मादक द्रव्य व्यसन भी आते हैं तथा इनकी चिकित्सा मनोवैज्ञानिक ढंग से की जानी चाहिये। कॉलमैन ने कहा सन् 1962 तक अंगिक दृष्टिकोण अपनी चरम सीमा पर था। कॉलमैन के दृष्टिकोण के बाद ही मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण का शुभारम्भ हुआ।

2. मनोजात दृष्टिकोण (Psychogenic point of view) :- मनोजात दृष्टिकोण के क्षेत्र में सबसे पहले ऐन्टन मेस्मर ने महत्वपूर्ण कार्य किया मनोजात दृष्टिकोण के अनुसार मानसिक रोगी का कारण मनोवैज्ञानिक होता है। ऐन्टन मेस्मर ने मैग्नवेल द्वारा बनाए गये चुम्बकीय चिकित्सा सिद्धान्त के स्थान पर मेस्मेरिज्म चिकित्सा सिद्धान्त की स्थापना की। यह उपचार पद्धति इस सिद्धान्त पर आधारित की गई थी कि व्यक्ति के शरीर में उपस्थित रहने वाली चुम्बकीय मात्रा के क्षय होने पर मानसिक रोग होते हैं। मनोजात दृष्टिकोण के विकास में महत्वपूर्ण योगदान जेम्स ब्रेड, ली वाल आदि का है।

Scanned with CamScanner